Rural Studies (RM&D)
Patna University
Semester-I

Indian Rural Society & Rural Administration
Course/ Paper Code:-CC-1 Unit-3

गॉधीजी आज भी प्रासंगिक हैं।

(E-content)

Dr. Shashi Gupta
Assistant Professor (Guest Faculty)
P.G. Department of Rural Studies (RM&D)
Patna University
Mobile No.:9472240600
Email: drsgupta01@gmail.com

गॉधीजी आज भी प्रासंगिक हैं।

देश विदेश में हाल की अनेक घटनाएं इस मान्यता की पुष्टि करती है कि गांधीजी के शारीरिक अवसान के 70 वर्ष से अधिक समय के बाद भी गांधीजी और उनके सिद्धान्त लोगों को राह दिखा रहे है। अपने देश में गत दिनों हुए कुछ आन्दोलनो पर नजर डालें, पाएगें कि वह काफी हद तक गांधीवादी चिंतन एंव आचरण से न केवल प्रभावित है बल्कि प्रेरित भी रहें। इसका अर्थ यह है कि आन्दोलनकारी और उनके नेता अपने कार्यक्रम की विश्वसनीयता बनाए रखने के लिए गांधीवाद का सहारा लेना उपयोगी एंव सार्थक मानते रहे है। जब भी किसी समुह को अपनी मांगों के सिलसिले में शान्तिपूर्ण प्रदर्शन करना होता है तो राजघाट या संसद भवन के परिसर मे बापु की विशाल प्रतिमा की छाया का आश्रय लेते है । अब तो युवा भी गांधी जी को अपने आदर्श मानने लगे है। गांधीगिरि विरोध प्रदर्शन का नया तरीका बन गया है। जिसमें फूल या अन्य उपहार भेंट कर अपने विरोधी का दिल जितने की चेष्टा की जाती है। गांधीजी हमारे युग की ऐसी विभूति है जिन पर सबसे अधिक लिखा गया है। उनका जीवन हमारे सांस्कृतिक जीवन का भी प्रमुख हिस्सा बन गया है। उन पर उनके फिल्में बनी है, नाटकों का मंचन हुआ है और उनकी विभिन्न मुद्राओं में असंख्य प्रतिमाएं समूचे देश मे प्रतिष्ठित हैं। भारत का शायद ही कोई ऐसा शहर, कस्बा, हो जहाँ उनके नाम पर किसी सड़क या मार्ग का नामांकरण न किया गया हो। गांधीवाद एक ऐसा दर्शन है जो पिछले 9 दशकों से ज्योति–स्तंम्भ के रुप मे हमारे राष्ट्रीय जीवन के बीच मौजूद है। यो गांधीवाद कोई शास्त्रीय दर्शन या स्कूल नही है, जिसे किसी विशेष विषय अथवा अनुशासन से जोड़ा जा सके। विशुद्ध रुप से यह न तो राजनितिक विचारधारा है और न ही आर्थिक, सामाजिक या सांस्कृतिक चिंतन। गांधीवाद वास्तव मे मानव आचरण को दिशा देने वाली एक दृष्टि है, जो महात्मा गांधीजी के लम्बे संघर्षशील जीवन से उपजे कुछ सिद्धान्तों, कार्यशैलियों, आचार पद्वतियों एवं विचारों को अपने में समेटे हुए है। उनकी यही व्यावहारिकता उन्हें प्रासंगिक बनाती है।

स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान ही गांधीजी तथा अन्य राष्ट्रीय नेताओं ने लोकतंत्र की अवधारणा को आत्मसात कर लिया था, जिसमें स्वतंत्रता के प्रति के बाद शासन तंत्र चुनने मे देश को कोई दुविधा नही हुई। गांधीजी ने कहा था, ''असली स्वराज कुछ लोगों द्वारा सत्ता प्राप्त करने से नही आएगा बल्कि यह सभी के द्वारा इसकी क्षमता हासिल करने से ही आ पाएगा।'' लोकतंत्र ही वास्तव मे वह व्यवस्था है जो आम आदमी को शासन का भागीदार बनने का अवसर प्रदान करती है। भारत के लिए यह गर्व की बात है कि अनेक संकटो के बाबजूद उसने लोकतंत्र का रास्ता

नही छोड़ा। आज भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है जो दुसरों के लिए प्रेरणा का स्त्रोत हैं। गांधीजी की दृष्टि मे लोकतंत्र का अर्थ था गाँव मे रहने वाले निर्धनतम व्यक्ति को भी शासन के बारे मे निर्णय लेने का अधिकार देना। 18 जनवरी, 1948 को हरिजन मे गांधीजी ने लिखा था, '' सच्चे लोकतंत्र का परिपालन केन्द्र मे बैठे 20 व्यक्तियों द्वारा नही कराया जा सकता। इसका कार्यान्वयन प्रत्येक गाँव के निवासियों द्वारा ही होना चाहिए। भारत के सच्चे लोकतंत्र की ईकाई गाँव ही हैं।'' इसमें कोई सन्देह नहीं कि सच्चा विकास तभी हो सकता है जब उसमे लोगों की भागीदारी हो और विकास योजनाएं उनपर उपर से न थोपी जाए। दिसम्बर 1992 मे 73वॉ संविधान संसोधन विधेयक पारित कर के सरकार ने पंचायतीराज के संबंध मे गांधीजी से चिंतन को साकार करने की दिशा मे महत्वपूर्ण कदम बढ़ाया । महिलाओं और अपेक्षित वर्गो के 35 प्रतिशत आरक्षण के कारण गाँवो मे सत्ता उन लोगों के हाथो में भी पहुँच रही है, जो इससे सदियों से वंचित थे। महिलाएं अब प्रशासन का दायित्व बखूबी संभाल रही है। निश्चय ही गांधीजी का ग्राम स्वराज और महिला सशक्तिकरण का सपना धीरे धीरे पुरा हो रहा है। महात्मा गांधी कहा करते थे कि वास्तविक भारत गाँवो मे बसता है । गाँवो मे रह रहे करोड़ों लोगों का जीवन स्तर सुधारने के उदेश्य से ही उन्होनें स्वराज प्राप्ति का वीड़ा उठाया था। 26 मार्च, 1939 को यंग इंडिया मे अपनी इस धारणा को स्पष्ट करते हुए उन्होनें लिखा, '' मै स्वराज प्राप्ति के लिए काम कर रहा हुँ उन करोड़ों बेरोजगार और मेहनतकश लोगों के लिए जिन्हें एक जून का खाना भी नसीब नही होता और जो थोड़े से नमक के साथ रोटी खाकर गुजारा कर रहे हैं।'' 1998 के दशक में उदारीकरण के बाद शहरीकरण को बढ़ावा मिला है तथा ग्रामीण क्षेत्र उपेक्षित होने लगे है। किन्तु सरकार ने बढ़ती बिषमताओं को दूर करने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों मे विशेष योजनाएँ शुरु की जिनके जरिये उपेक्षित और गरीब लोगों को रोजगार, सब्सिडी तथा नकद राशि के रुप मे मदद देने का प्रयास किया गया। महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (मनरेगा), ऐसा ही एक क्रांतिकारी कदम है। साथ ही सूचना का अधिकार कानून बना कर 'मनरेगा' तथा अन्य विकास योजनाओं में होने वाले भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने का प्रबंध किया गया। हाल मे सरकार ने अनौपचारिक क्षेत्र के मजदूरों तथा अन्य कामगारों के लिए सामाजिक–सुरक्षा के कई कार्यक्रम जैसे प्रधानमंत्री जीवन सुरक्षा योजना, जीवन ज्योति बीमा योजना, अटल पेंशन योजना साथ ही आयुष्मान भारत योजना जैसे कई योजनाओं की शुरुआत की। मातृत्व बंदन योजना के माध्यम से निर्धनता की रेखा से नीचे की गर्भवती महिलाओं को प्रसव के लिए वित्तिय सहायता दी जा रही है खाद्य सुरक्षा कानून के माध्यम से गरीबों को सस्ता अनाज उपलब्ध कराने का प्रयास किया जा रहा है। इन सब उपायों से गाँवों से शहरों मे पलायन की गति पर कुछ अंकुश लगा है।

वर्तमान मे आत्मनिर्भर भारत ''भोकल फोर लोकल'' का नारा गांधीजी के स्वदेशी की भावना को जोड़कर देखा जा सकता है। स्वदेशी की भावना को गांधीजी ने स्वाधीनता आंदोलन के अभिन्न अंग के रुप मे अपनाया तथा उसे जन–जन तक पहुचाने का प्रयास किया। गांधीजी की स्वदेशी भावना कोई संकिर्ण राष्ट्रवादी सोच की उत्पति नही, बल्कि देश के आर्थिक विकास और कूशल कारीगरों व श्रमिकों के रोजगार से जुड़ी हुई थी। इसी दृष्टि पर जोर देते हुए उन्होने खादी और चरखा आन्दोलन चलाया। साथ ही गांधीजी लघु और कुटीर उद्योगों के पक्षधर थे। वे कहते थे कि मनुष्य को मशीन का गुलाम नहीं होना चाहिए। मशीनों का वे इसलिए विरोध करते थे क्योंकि उनसे जितने लोगों को काम मिलता है उससे कई गुना कारीगर बेकार हो जाते है। आज जिस गति से उपभोक्तावाद और संग्रह की संस्कृति बढ़ रही है। विकसित देशों समेत समूचे विश्व में आर्थिक मंदी तथा बेरोजगारी बढ़ रही है, उसे देखते हुए गांधीजी की चेतावनी ठीक लगती है। यह सही है कि आज के युग में औद्योगीकरण के बिना विकास तथा प्रगति कर पाना कठिन है किन्तु यदि गांधीजी के सिद्धान्त पर चलकर हम छोटे, कुटीर तथा ग्रामीण उद्योगों मे विकास पर अधिक ध्यान देते तो बेरोजगारी, आर्थिक विषमता, शोषण और उपभोक्तावाद जैसी समस्याएं इतना विकराल रुप न ले पाती। इसके अलावा वैश्विक स्तर पर पर्यावरण प्रदूषण और ओजोन परत, ग्रीन गैस का जो खतरा मंडरा रहा है, उससे भी हम मुक्त होते। प्रकृति के विरुद्ध हिंसा, जिसे पर्यावरण संकट के नाम से जाना जाता है हमारे सामने एक गंभीर समकालीन चुनौती है। पर्यावरण संबंधी वर्तमान संकट एक समस्या नही है बल्कि इंसान और प्रकृति के बीच संबंधो के बारे मे भारी गलतफहमी पर आधारित मानक दृष्टिकोण का लक्षण मात्र है। प्रकृति को मनुष्यों से अलग करके देखने की बजाय गांधीजी ने कहा हमें स्वयं और बाकी सजीव विश्व के बीच अधिक जीवंत संबंध महसूस करना चाहिए। गांधीजी ने सुझाव दिया कि मनुष्य और प्रकृति के बीच पुरा तालमेल होना चाहिए, यह नही होना चाहिए की इंसान अपने लाभ के लिए प्रकृति का अंधाधुन दोहन करता रहे। वर्त्तमान मे उत्तराखंड के चमोली मे आए भीषण भुस्खलन, बाढ़ आदि का उदाहरण हमारे सामने है। गांधीजी के पर्यावरण संकट को हम अलग–थलग करके नहीं देख सकते। हम गाँव वालो को उनके घरों से उजाड़ कर देश का विकास नहीं कर सकते। प्रकृति के साथ सामंजस्य की गांधीवादी सोच को अपनाकर हम प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करने के साथ–साथ नक्सलवाद जैसी समस्याओं से भी बच सकते है। आज हमारी ऑखों के सामने मानवता का अस्तित्व अधर पर लटका दिखाई दे रहा है। जाहीर है कि गांधीजी, उनका चिंतन और कर्म केवल भारत के लिए ही नही अपितु समूची मानवता के लिए प्रकाश स्तंभ है, जिसकी किरणों और रोशनी की सहायता से हम अपने जीवन को दिशा दे सकते है। सच तो यह है कि आने वाले समय मे हमें उनके द्वारा बताए गये रास्ते

पर चलने की और अधिक आवश्यकता होगी और उसकी प्रासंगिकता सदियों तक बनी रहेगी। हम जानते है कि आज मानवता बड़े नाजुक दौर से गुजर रही है। मानव निर्मित संकट के कारण कोरोना महामारी मे पुरे विश्व को अपने गिरफ्त मे ले लिया है। मानव को अपने अस्तित्व की रक्षा का भीषण संकट का सामना करना पर रहा है।

सन्दर्भ

1. **sarvodaya: It's Principal and Programmes.**
2. शंकरराव देवः '' सर्वोदय का इतिहास और शास्त्र''
3. दादा धर्माधिकारी, सर्वोदय दर्शन
4. विनोबा, व्यतित्व और विचार
5. जयप्रकाश नारायण ए पिक्चर ऑफ सर्वोदय सोशल ऑर्डर
6. आचार्य कृपलानी, गांधी विचार विमर्श
7. गांधी विचार समागम, संपूर्ण कार्यवाही,2019 गांधी सार्धती, शिक्षा विभाग बिहार सरकार
8. एम के गांधी हिन्द, स्वराज